

महावाणी - विश्वकल्याण की वाणी

३०/०९/२०२६

ॐ परमात्मने नमः

परमात्मा गुरुजी को नमस्ते। परमात्मा गुरुजी को यह सेवा समर्पण है।

सभी आत्माएं अपने मूलस्वरूप स्थिति में स्थित हो जाएं... सभी देखिए अपना मूलस्वरूप... सभी अपने मूलस्वरूप की लाइट को देखें... देखिए आपकी मूलस्वरूप की स्थिति से, आप आत्मा से लाइट और माइट फैल रही है... सभी अपने मूलस्वरूप की लाइट को स्पष्टता से देखें... अपने मूलस्वरूप का गहराई से अनुभव करें।

जो-जो कर्म आप आत्मा आपके लाइट में स्थित रहकर करते हो, उन कर्मों से आप आत्मा के खाते में पुण्य जमा हो जाता है। पर जब-जब जिस भी कर्म में आप आत्मा की लाइट जागृत नहीं रहती, उस कर्म में आपसे कुछ ना कुछ गलतियां हो जाती हैं; जिससे आप आत्मा के खाते में पाप कर्म लिख जाता है। पाप और पुण्य यह समझने के लिए बहुत सहज है—आप जो कोई भी कर्म आपके सूक्ष्म और स्थूल कर्मेन्द्रियों द्वारा करते हो, वह कर्म अगर आप आप आत्मा की लाइट के, आप आत्मा के मूलस्वरूप में स्थित रहकर करते हो, तो वह हर कर्म का फल पुण्य के रूप में गिना जाता है और जब-जब आप आपके मूलस्वरूप स्थिति में स्थित नहीं रहते हो और आपसे जो भी सूक्ष्म या स्थूल कर्म घटित होता है, उसका फल पाप कर्म में गिना जाता है। यह संगमयुग में सभी आत्माओं के लिए पाप और पुण्य का ज्ञान है।

अगर कोई आत्मा का दिल है कि वह कुछ कर्मणा सेवा ईश्वर के घर में करे, पर अगर वह आत्मा अपने स्थिति में ना रहते हुए कोई कर्मणा सेवा करते है, तो वह भी कर्मणा सेवा से उसके खाते में पाप कर्म ही जमा होगा; क्योंकि वह आत्मा अपनी मूलस्वरूप अवस्था में, अपने लाइट की स्टेट में ना रहते हुए उसने ईश्वर के घर में, परमात्मा के घर में कुछ कर्मणा सेवा की। तो जब आत्मा की लाइट ऑन ही नहीं है, तो वह

कर्म करने वाला कोई और मायावी अस्तित्व होता है। फिर उसके द्वारा जो कुछ भी कर्म किया जाता है, उस कर्मों की वाइब्रेशन के रूप में ऊर्जा वहां पर रहती है। और जब कोई उस कर्म क्षेत्र में कोई और आत्मा वहां पर आके उपस्थित हो जाती है, तो जिस आत्मा द्वारा वह कर्मणा सेवा घटित हुई, उस क्षेत्र में कोई और आत्माएं अगर पहुंचती हैं, तो उस आत्मा के स्थिति में ना होने के कारण जो मायावी अस्तित्व ने उसके द्वारा जो कर्मणा की गयी, उसके वाइब्रेशन के प्रभाव में बाकी जो भी आत्माएं उस कर्म क्षेत्र में आती हैं, उन पर उसका प्रभाव आ जाता है और उनकी भी स्थिति कमजोर होती है। तो जब आत्मा ने अपनी लाइट को खोकर मायावी अस्तित्व के द्वारा कर्म किए, उसके वाइब्रेशन से और आत्माओं पर प्रभाव आया, उनकी स्थिति नीचे गयी; उसका पाप कर्म का खाता बन गया। इसलिए संगमयुग में सभी आत्माओं को कोई भी कर्म करने से पहले, सबसे पहले अपने मूलस्वरूप अवस्था में, लाइट की अवस्था में ही कर्म करने जरूरी हैं; क्योंकि आपका हर एक कर्म आपका पुण्य का या पाप का खाता बनाता है। किसी ने परमात्मा के यज्ञ में भोजन सेवा की और वह भोजन बनाते समय अगर वह आत्माएं, बनाने वाली सेवाधारी आत्माएं अगर अपने मूलस्वरूप में ना रहते हुए, ऐसे ही कर्म करते रहे, तो उनसे जो भोजन बनाया जाएगा, वह उन्हीं के मायावी अस्तित्व के द्वारा भोजन बनाया जाएगा। तो उस भोजन में उनके मायावी अस्तित्वों की ऊर्जा रहेगी; और वह भोजन जो भी यज्ञ में बाकी सभी अपने शरीरों को सेवन कराएंगे, फिर उस भोजन से उन सभी के ऊपर प्रभाव आएगा। और फिर आत्मा ने अपना पाप कर्म का खाता बना लिया। अगर वही भोजन मूलस्वरूप अवस्था में, किचन में सभी सेवाधारी अपनी स्थिति में रहकर बनाएं, तो बाकी सभी को जिनको भी खिलाना है, उन सभी के ऊपर हर प्रकार से पॉजिटिव प्रभाव ही रहेगा; आपके खाते में पुण्य ही जमा होगा; क्योंकि आपने आपकी लाइट की स्थिति में भोजन बनाने की सेवा की।

हर कर्म का ऐसे ही हिसाब-किताब होता है—कोई भी कर्म, फिर वो झाड़ू लगाना हो, बर्तन साफ करने हों, कपड़े धोने हों, भोजन बनाना हो, यज्ञ की कोई व्यवस्था करनी हो। हर क्षेत्र में जब आत्माएं

अपनी लाइट को ऑन कर कर ही कर्म में उतरेंगे, कर्म करेंगे, तो हर एक सेकंड वो अपने खाते में पुण्य ही जमा करेंगे। और उस लाइट के स्थिति में रहने के कारण आपका हर कर्म सदैव सहजता पूर्वक ही होगा; आपको कभी भी कठिनाइयां या परेशानियां नहीं होंगी। कठिनाइयां और परेशानियां जिस भी कर्मों में, जिस भी कर्म क्षेत्र में आती हैं, समझ जाना आप आत्माएं आपकी स्थिति में ना होने के कारण कर्म क्षेत्र में जो भी कठिनाई या परेशानियां उपस्थित हो गयी हैं, वह सारे मायावी वाइब्रेशंस के कारण हैं। आप आत्माएं, सबसे पहले कर्म क्षेत्र में जाने से पहले आपको आपकी लाइट ऑन करनी ही होगी। जैसे ही आपने आप आत्मा की लाइट को कर्म में जाने से पहले कॉन्ससियस्ली ऑन कर दिया, तो सबसे पहले उस कर्म क्षेत्र के वहां पर जो भी पुराने वाइब्रेशंस होंगे, वो सारे नलीफाई हो जाते हैं; वहां के सारे वाइब्रेशन क्लियर हो जाते हैं। वहां पर किसी भी प्रकार के किसी के भी वाइब्रेशन नहीं रहेंगे; क्योंकि आप आत्मा ने कर्म क्षेत्र में जाने से पहले ही आप आत्मा की लाइट को ऑन कर दिया। और ऑटो में वह लाइट आपके कर्म क्षेत्र में पहुंच गयी और वहां के सभी अशुद्ध वाइब्रेशंस को या किसी भी प्रकार के पुराने वाइब्रेशन को पूर्ण रूप से उसने क्लियर किया। यह अति सूक्ष्म प्रोसेस होती है। इसलिए हर कर्म करने से पहले और कर्म करते समय मूलस्वरूप अवस्था में स्थित रहना जरूरी है।

जब-जब कोई कर्म क्षेत्र में आप आपके मूलस्वरूप लाइट की अवस्था में स्थित रहते हो, तो आपसे सदैव उस कर्म क्षेत्र में शुद्ध वाइब्रेशन फैलते रहते हैं। आपको अलग से वहां वाइब्रेशन फैलाने की जरूरत नहीं पड़ेगी। जैसे ही आप आत्मा ने आपकी लाइट ऑन कर दी, वाइब्रेशन फैलना शुरू हो गए। इसलिए कभी भी किसी भी कर्म में आपको कठिनाई आए या परेशानी आए, या आपको कुछ समझ में ना आए कि कैसे करें, उस समय कुछ क्षण के लिए आप आपके मूलस्वरूप अवस्था में बस स्थित हो जाना। आप आपके लाइट को बस देख लेना, कुछ क्षण ही। तुरंत आपको आपके सामने उस परिस्थिति का समाधान दिखेगा, उस परिस्थिति का समाधान मिल जाएगा। क्योंकि परेशानी और कठिनाई परिस्थिति के रूप में

दिखती है, पर वो होते हैं वाइब्रेशन के रूप में, ऊर्जा के रूप में। जब-जब आप आत्मा की ऊर्जा कम होती है, तब-तब आपको कठिनाई और परेशानियां कर्मों में, आपके कर्म क्षेत्र में मिलेगी।

इसलिए मूलस्वरूप का अभ्यास हर कर्म में रखने से आप सिर्फ आपके खाते में पुण्य ही नहीं जमा करते, बल्कि उस कर्म क्षेत्र में आपके मूलस्वरूप से जो-जो शुद्ध वाइब्रेशन उस कर्म क्षेत्र में फैलते रहते हैं, उससे भी सेवा होती है। जो कोई उस कर्म क्षेत्र में आएगा, वो भी अपनी मूलस्वरूप अवस्था में आ जाएगा। उसको अपने आप लगेगा, वो भी वह कर्म अपनी स्थिति में लाइट को ऑन करते हुए करे। यह हुई रियल सेवा—आपके मूलस्वरूप के वाइब्रेशन से दूसरों के मूलस्वरूप को जागृत करने के लिए आप निमित्त बने। इसलिए हर कोई, हर किसी के पास सदैव पुण्य जमा करने का बहुत बड़ा मौका होता है। हर सेकंड हर कोई अपने खाते में पुण्य लिख सकता है। आप जो हो, बस आपको आपके मूलस्वरूप में स्थित रहना है।

संगमयुग माना आप आत्मा को आपके मूलस्वरूप स्थिति में रहने का युग। और जैसे ही आप आपके मूलस्वरूप अवस्था में, लाइट की अवस्था में जागृत रहते हुए कर्म करेंगे, वैसे ही आप सदैव खुशी में और मौज में हर कर्म को एंजॉय कर पाएंगे। इसलिए कोई-कोई कहते हैं ना— “आप थोड़ा लाइट रहो।” लाइट रहो माना क्या? आप आपके लाइट स्वरूप अवस्था में रहो; क्योंकि लाइट ही लाइट को प्रभावित करेगी। और लाइट ना होने के कारण आप दूसरों के लाइट को भी कम करने के लिए निमित्त बन सकते हो। अगर आपका मायावी अस्तित्व बहुत तेज होगा, तो उसके वाइब्रेशन सामने वाले पर बहुत जल्दी असर कर सकते हैं। और फिर आपके मायावी अस्तित्व के वाइब्रेशन के कारण उसका भी मायावी अस्तित्व ही इमर्ज होगा। आप जो आपके अंदर इमर्ज करोगे, वही आपके संबंध-संपर्क में जो-जो आएंगे, उनका वही स्वरूप इमर्ज होगा। यही है संग का रंग लग जाना। आप आपके मूलस्वरूप में स्थित रहते जाओगे, आपके संबंध-संपर्क में जो भी आते जाएंगे, वो भी अपने मूलस्वरूप अवस्था में आते जाएंगे। यह

हुई आपसे सेवा। सेवा करने के लिए आपको कहीं बाहर जाने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी; पुण्य कमाने के लिए संगम युग में आपको बाहर जाने की जरूरत नहीं है। आप आपके मूलस्वरूप को सदैव जागृत रखकर आपसे सदैव पुण्य ही होगा।

और यह एक सहज अवस्था है, अति सहज। बस आपको यही स्मृति सदा रहे—आप जो हो, माना आप जो लाइट हो, बस आपको उस ही स्मृति में रहना है। बस अगर यह स्मृति आपकी हट गयी, तो आप बॉडी कॉन्ससियसनेस्स में आ जाएंगे; और जैसे ही आप बॉडी कॉन्ससियसनेस्स में आ गए, मायावी अस्तित्व इमर्ज हो गए, उन अस्तित्वों के वाइब्रेशन फैलना शुरू हो गया। इस साइकल को सभी समझें। इसलिए संगमयुग में आपका काम यही है—सभी आत्माओं को अपने मूलस्वरूप में, अपनी लाइट की अवस्था में ही रहकर हर कर्म करने होंगे। आपको ही आपकी ज्योत को जागृत करना होगा। आपकी जागृति से बाकी आपके संबंध-संपर्क में जो-जो आते जाएंगे, वह सभी आत्माएं जागृत होते जाएंगे।

इसलिए आप सभी आत्माओं की बहुत बड़ी जिम्मेवारी है। जितना जल्दी आप आपकी जिम्मेवारी उठाएंगे, उतना जल्दी आप जागृत हो जाएंगे; और जैसे-जैसे आप जागृत हो जाएंगे, आपसे कनेक्टेड संबंध-संपर्क में जितनी भी आत्माएं होंगी, वह जागृत होना शुरू हो जाएंगी; क्योंकि सभी आत्माएं एक दूसरे से कनेक्टेड हैं। आप आपकी लाइट को जागृत करो, बाकी सब की लाइट अपने आप जागृत होना शुरू हो जाएगी। यह बहुत सहज प्रोसेस परमात्मा ने संगमयुग में रखी है। इसमें किसी भी प्रकार से कोई मेहनत नहीं है। बस आपको आपके लाइट को सदैव ऑन रखना होगा। आपकी लाइट कोई और ऑन नहीं कर सकता; यह हर किसी की अपनी मर्जी है कि उसको उसके मूलस्वरूप स्थिति में रहकर कर्म करने हैं या उसको उसके मायावी अस्तित्व के द्वारा कर्म करने हैं।

पर एक बात को सदैव स्मृति में रखना—आपका हर एक कर्म आपका नया हिसाब-किताब रचता है; इससे कभी भी कोई भी बच नहीं सकता। इसलिए जिस क्षण आपको यह ज्ञान मिल जाता है, उस

क्षण से ऐसे ही समझो आपका नया हिसाब-किताब फिर से शुरू हो जाता है। क्योंकि संगम युग में सभी आत्माओं को पहले उनकी पहचान दी जाती है, उनको उनकी समझ दी जाती है, हर प्रकार की ज्ञान से समझ दी जाती है। उस समझ को लेकर, उस ज्ञान को लेकर फिर हर आत्मा जो करेगी, वह उसके खाते में लिखा जाता है—यह एक ऑटो सिस्टम है। इसलिए सिर्फ परमात्मा के यज्ञ में सेवा करते आप यह नहीं समझना कि आपसे तो सदैव सेवा ही हो रही है, सदैव आपके खाते में पुण्य ही जमा हो रहा है। आप जिस स्थिति में जो सेवा करते हो, वह आपके खाते में उस स्थिति के अनुसार उसका फल लिखा जाता है।

इसलिए संगमयुग है खुशियों का युग। वह कौन सी खुशियां? आंतरिक खुशियां, ना कि बाहरी खुशियां। जब-जब आत्मा अपने मूलस्वरूप अवस्था में रहती है, कर्म में, वह अपने आप आंतरिक खुशी में ही रहती है, वह अपने आप मौज की अवस्था में ही रहती है। लाइट खो गयी, सब खो गया। इसलिए यहां पर आपके पास कमाई जमा करने का प्रतिपल, हर सेकंड मौका है। हर एक आत्मा के पास मौका है—फिर अगर कोई कहां पर नौकरी-धंधे में हो, घर-परिवार में हो या परमात्मा के यज्ञ में कोई समर्पित रूप में हो, हर किसी के पास हर क्षण कमाई जमा करने का मौका है।

सिर्फ उस कमाई में एक अंतर है—कोई अपने संसार में रहकर मूलस्वरूप स्थिति में रहकर हर कर्म अगर करता है, संसार में परिवार में चलते, नौकरी-धंधे में चलते कोई मूलस्वरूप अवस्था में रहकर, अटेंशन देकर, अपने लाइट को ऑन रखते हुए अगर कर्म करते हैं, तो उनके हर कर्म में एक गुना उनको पुण्य का फल प्राप्त होगा...फल तो अवश्य प्राप्त होगा। उसी प्रकार से कोई परमात्मा के यज्ञ में समर्पित रूप में चलते, परमात्मा के पास उसके यज्ञ में कोई सेवा करते हुए अगर कोई अस्तित्व अपने लाइट के स्थिति में वह कर्म करते हैं, तो उसका पुण्य पदम गुना होता है; क्योंकि आप परमात्मा के यज्ञ में समर्पित रूप से उस कर्म में सेवा कर रहे हो। पुण्य अवश्य मिलेगा। फिर कोई संसार में रहते हुए मूलस्वरूप में

कमाई जमा करे, वह हुआ एक गुना; और कोई परमात्मा के यज्ञ में समर्पण करके, सेवा में मूलस्वरूप में रहते हुए करे, उसका हुआ पदम गुना।

अंत में हर किसी को अपने हर कर्म का पूर्ण रूप से हिसाब-किताब मिल जाएगा कि कौन-कौन से कर्म आपने, आप आत्मा ने आपकी लाइट को ऑन रखते हुए कर्म किए; उससे आपके खाते में कितनी कमाई जमा हुई, और कितने सारे कर्मों में आपने आपकी मूलस्वरूप स्थिति में ना रहते हुए, आपने आपकी लाइट की अवस्था में ना रहते हुए कर्म करके, आपने आपके खाते में कितना पाप जमा किया। कभी भी कोई यह नहीं कह सकता— “हमने तो कितनी ढेर सारी सेवाएं ईश्वरीय यज्ञ में की, फिर भी हमारे खाते में इतना पाप कैसे आया?” क्योंकि आपने जो भी सेवा की, वह आपने आपके लाइट की स्थिति में नहीं की। जब-जब कोई आत्मा अपने लाइट की स्थिति में रहती है, अपने आप उसका हर संकल्प, हर विचार, हर भाव उसकी उस सेवा के प्रति, कर्म के प्रति वृत्ति, उसका उस सेवा में, कर्म में होने वाला व्यवहार, उस सेवा में, उस कर्म में सभी सूक्ष्म और स्थूल कर्मेन्द्रियों द्वारा होने वाला व्यवहार अपने आप यह सब कुछ शुद्ध होता है। उसका इंटेंशन भी वह लाइट में स्थित होने के कारण, उस कर्म के प्रति का इंटेंशन भी शुद्ध होता है। इसलिए भाव से लेके, इंटेंशन से लेके कर्म तक सिर्फ लाइट ऑन करने के कारण, यह सब कुछ शुद्ध होने के कारण उसके द्वारा जो भी कर्म घटित होता है, उससे उसको पुण्य मिलता है।

पर कभी कोई, ऐसे ही कोई यज्ञ में, ईश्वरीय यज्ञ में सेवा देते हैं, कर्मणा के रूप में या किसी भी रूप से, पर उनका इंटेंशन शुद्ध नहीं होता, भाव शुद्ध नहीं होता, या उनके संकल्पों में अशुद्धि होती है, किसी भी प्रकार का रिटर्न या फल के रूप में कोई इच्छा या आकांक्षा होती है, किसी भी प्रकार का अशुद्ध भाव होता है—उसके कारण किसी ने भी ईश्वरीय यज्ञ में कोई कर्मणा सेवा की भी, पर यह सब कुछ अशुद्ध होने के कारण उसके खाते में पाप ही जमा होता है; क्योंकि वह करने वाला मायावी अस्तित्व है, लाइट को उस

आत्मा ने ऑन ही नहीं किया। लाइट ऑन हो गयी, अपने आप यह सब कुछ सबसे पहले शुद्ध हो जाता है और फिर आपसे कर्म घटित होने के बाद ही आपको उसका रिटर्न मिलता है।

इसलिए अंत में कभी कोई यह नहीं कहना— “हमने तो सब कुछ समर्पण किया, हम तो ईश्वर के बन गए, हमने तो इतने साल इस ज्ञान मार्ग में चल रहे हैं, फिर भी हमारा ऐसे कैसे खाता बना?” आप चेक करना—आपका इंटेंशन, आपका भाव, आपकी वृत्ति, आपके संकल्प सेवा करने के पीछे क्या थे; क्योंकि आप आपके स्थिति में थे ही नहीं। आप आत्मा ही उपस्थित ना होने के कारण, आप आत्मा ही आपकी स्थिति में ना होने कारण, घटित होने वाले सारे कर्म पाप कर्म में लिख गए हैं। इसको कोई मिटा नहीं सकता, यह आत्मा को ही भुगतना पड़ेगा।

इसलिए सभी आत्माएं गंभीरता से इस विषय को समझने की कोशिश करें। आपका हर एक कर्म आपका भाग्य जमा करता है या भाग्य घटा देता है। बाकी अंत में कभी कोई परमात्मा को ब्लेम नहीं कर सकता कि हमें यह समझ तो नहीं थी। परमात्मा सबसे पहले ज्ञान के रूप में सभी को समझ देते हैं, पर हर किसी को वह समझ अपने धारणा में उतारनी होगी। यह हर किसी की अपने ऊपर है। हर समझ जो परमात्मा द्वारा सभी को मिलती है, उस हर समझ को अगर हर कोई धारण करता जाएगा, तो हर एक समझ की धारणा से आप आत्मा की, आप अस्तित्व की शुद्धि होती जाती है; क्योंकि परमात्मा के हर एक समझ की धारणा में वह ताकत है, आप आत्मा की अशुद्धि को समाप्त करने की।

इसलिए संगमयुग में सभी आत्माओं को जो-जो ज्ञान से समझ मिलती जाती है, उसको तत्क्षण धारणा में लाना आवश्यक है। जितना-जितना धारणा में लाते जाओगे, उतनी-उतनी शुद्धि आत्मा की जल्दी होती जाएगी। यह बहुत सूक्ष्म और गुह्य बातें हैं—कैसे परमात्मा की एक शिक्षा के रूप में, ज्ञान के रूप में समझ देने के बाद आपकी कैसे, किस प्रकार की, कौन सी शुद्धि होती है। यह बहुत गुह्य बात है, कभी समय मिले तो बताएंगे। बस अभी यही ध्यान में रखना—परमात्मा, जो अनंत यूनिवर्स के रचयिता हैं,

वो इस संगम में, इस यूनिवर्स में आए हैं। उनसे जो-जो समझ मिलती जाएगी, उसको बस धारणा में उतारते जाना। जितनी समझ जिसने अपने धारणा में उतारी, उसको अंत में पता चलेगा उसने क्या-क्या प्राप्तियां कीं।

सभी आत्माएं अपने कर्मों का ध्यान रखना—फिर वो संसार में हों या परमात्मा के यज्ञ में, हर कोई अपने कर्मों का अच्छा हिसाब-किताब बनाना; क्योंकि एक-एक क्षण बीतता जा रहा है, एक-एक दिन बीतता जा रहा है, जो कि आपके कमाई का है। आज का और सदा का एक ही होमवर्क है—हर कोई अपने हर कर्म की चेकिंग करना, कौन से कर्म, कितने कर्म मूलस्वरूप स्थिति में आज के दिन में किए। हर कोई हर रोज इसकी चेकिंग अपने पास जरूर रखना; क्योंकि परमात्मा की श्रीमत है—हर कर्म को मूलस्वरूप में, अपने लाइट के स्थिति में ही करना है। सभी अपनी चेकिंग अवश्य करें।

सभी को नमस्ते।

ॐ परमात्मने नमः